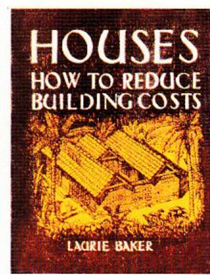
क्या झुग्गी-झोपड़ियां होना ज़रूरी हैं?

लॉरी बेकर

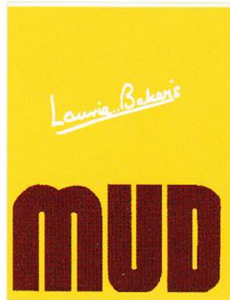


COSTFORD

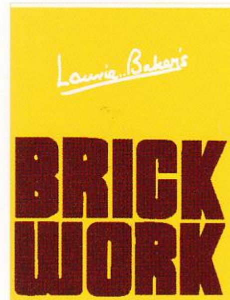
Other Titles in the Series



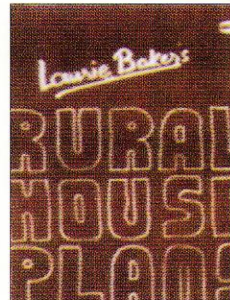
HOUSES
HOW TO REDUCE
BUILDING COSTS



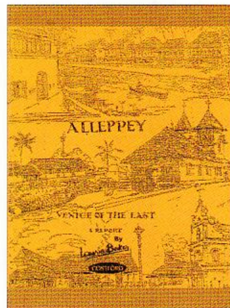
MUD



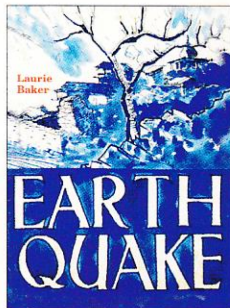
BRICK
WORK



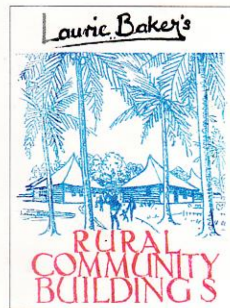
RURAL
HOUSE
PLANS



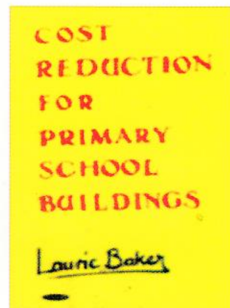
ALLEPPEY
VENICE
OF THE EAST



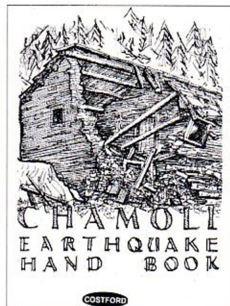
EARTH
QUAKE



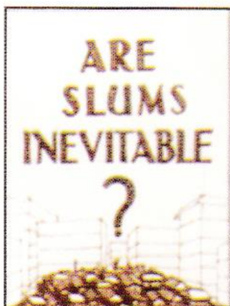
RURAL
COMMUNITY
BUILDINGS



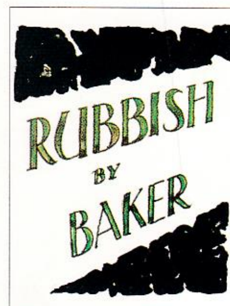
COST REDUCTION
FOR PRIMARY
SCHOOL BUILDINGS



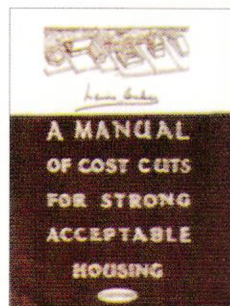
HOUSES
HOW TO REDUCE
BUILDING COSTS



ARE
SLUMS
INEVITABLE



RUBBISH
BY
BAKER



A MANUAL OF COST CUTS
FOR STRONG
ACCEPTABLE HOUSING

COSTFORD
Centre of Science and Technology For Rural Development
Ayyanthole, Thrissur, Kerala, India, PIN-680 003
Phone: 91-487-2365 988, 2366 388.
Fax: 91-487-2366 388

क्या झुग्गी-झोपड़ियां होना ज़रूरी हैं?

लॉरी बेकर

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

Published by
COSTFORD
Centre of Science and Technology
For Rural Development

COSTFORD

English

ARE SLUMS INEVITABLE ?

Laurie Baker

First Published in 1997

Reprint - May 2014

Published by
Centre of Science and Technology
For Rural Development

Ayyanthole, Thrissur, Kerala, India-680 003
Phone: 91-487-2365 988, 2366 388.
Fax: 91-487-2366 388

Cover & Illustrations
Laurie Baker

Price: ₹. 50/-

Printed at: MUDRA Sivakasi, Ph: 9447410514

झोपड़पट्टियां

बेहद शर्मनाक जगहें हैं

वे मानवता पर एक कलंक हैं!

न केवल उन लोगों के लिए

जो उनमें रहने को मज़बूर हैं

बल्कि हम सब लोगों के लिए

योजनाकार, आर्किटेक्ट

भवन निर्माता और ठेकेदार,

हमारे सरकारी विभागों

और उन सभी लोगों के लिए जो

झोपड़पट्टियों के पास से होकर गुज़र जाते हैं

और बहाना बनाते हैं, और जो अपनी आंखें दूसरी

ओर फेर लेते हैं, जैसे उनका झोपड़पट्टियों से कुछ

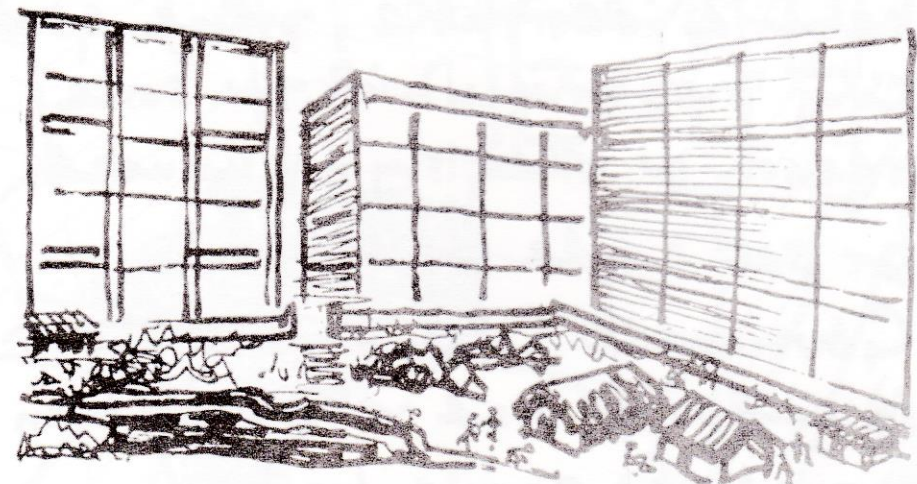
लेना-देना ही न हो.

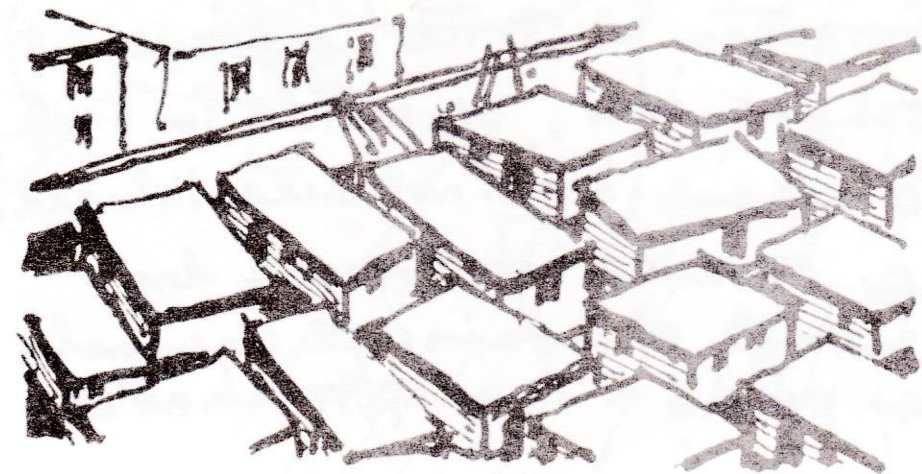
किसी भी झोपड़पट्टी को छुपाने के लिए उस बस्ती के सामने बड़े-बड़े इश्तहार बोर्ड, होर्डिंग या बैनर लगाने से कुछ फायदा नहीं होगा. कुछ लोग सोचते हैं उससे आने-जाने वाले लोग झोपड़पट्टी को देख नहीं पाएंगे.

किसी झोपड़पट्टी और उसमें रहने वाले लोगों को एक स्थान से धकेल कर किसी अन्य उजाड़ जगह पर बसाने और वहां एक नई झोपड़पट्टी स्थापित करने से कोई फायदा नहीं होगा.

किसी झोपड़पट्टी वाली बस्ती को गिरकर उसी आकार और उन्हीं सुविधाओं वाले सीमेंट-स्टील के घरों में बदलने से भी कुछ फायदा नहीं होगा.







झोपड़पट्टी उस स्थान पर इसलिए बनी थी क्योंकि वहां पर कभी एक बेकार, बंजर, गंदी जगह खाली पड़ी थी.

१. शायद वो झोपड़पट्टी दो "बढ़िया" महंगी और अमीर इमारतों के बीच में स्थित हो. वो जगह मालूम नहीं क्यों, किसी कारणवश वहां खाली पड़ी रही होगी.

२. हो सकता है कि झोपड़पट्टी जहाँ बनी हो वो प्लाट शुरू में किसी सरकारी काम के लिए अलाट हुआ हो. अब शायद उस विभाग के नौकरशाह रिटायर हो गए हों, या उनका तबादला हो गया हो, और लोग यह भूल गए हों कि वो प्लाट किस लिए और क्यों अलाट हुआ था? या फिर पैसों की किल्लत के कारण, या नाले, सीवेज या कोई ताल होने के कारण उस प्लॉट का विकास रुक गया हो.



फिर उस खाली प्लॉट पर कुछ बेघर, बेरोज़गार लोग आकर बस गए होंगे और उन्होंने वहां अपने लिए पुरानी लकड़ी, बांस-बल्लियों, पुरानी टिन शीट, एस्बेस्टस शीट, गत्ते के डिब्बों, जूट और प्लास्टिक की बोरियों आदि से अपने लिए झोपड़ियां बनाई होंगी.

इस तरह वे लोग अपनी दिहाड़ी के स्थान, और अमीर लोगों के निकट रह पाए. रईस लोग अपने गंदे काम, इन बेघर, बेरोज़गार लोगों से करवाते थे.

गरीब लोग अपने संगी-साथियों और समुदाय के अन्य लोगों के साथ रहकर खुद को सुरक्षित महसूस करते थे.



जल्द ही उनके दोस्त, और दूर-दराज़ के गाँवों से अन्य बेरोज़गार लोग भी उनके साथ आकर बस गए. फिर बहुत जल्दी ही वो बेकार और बंजर प्लाट पूरी तरह से झुग्गी-झोपड़ियों से आबाद हो गया. अब उन झोपड़ियों के बीच सिर्फ चलने भर की जगह बाकी बची थी. वहां पर कोई सड़कें, खुला स्थान, पानी - निश्चित रूप से पीने का पानी उपलब्ध नहीं था! वहां बिजली और शौचालय भी नहीं थे! और अगर उस प्लॉट पर कभी कोई पेड़ या झाड़ियां रही होंगी तो उनको लोगों ने काटकर झोपड़यां बनाने या जलाऊ लकड़ी के लिए इस्तेमाल कर डाला होगा। वहां से जल्द ही हरियाली पूरी तरह से गायब हो गई होगी.

उन झुग्गी-झोपड़ियों वालों से किसी ने हटने को नहीं कहा होगा - क्योंकि सभ्य लोग उनसे डरते होंगे. उनमें से कई लोग ट्रेड यूनियन या राजनैतिक दलों के सदस्य बन गए होंगे जिनके नेताओं को भीड़ जुटाने के लिए आसपास बसे लोगों की अक्सर ज़रुरत पड़ती होगी. यह उन गरीब लोगों की असलियत का बस एक पक्ष है जिनके पास झुग्गी-झोपड़ियों में बसने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं रहा होगा.

वे लोग हमारा यानी सभ्य लोगों का कचरा और गंदगी तो साफ़ करते ही हैं.

वे हमारे द्वारा फेंके हुए कूड़े-कचरे और कबाड़ को अलग-अलग समूहों में छांटते हैं, जिससे कि उनको रीसायकल, यानि उनका दुबारा उपयोग हो सके.

पुराने फेंके हुए कागज़ से थैलियां और लिफ़ाफ़े बनाए जा सकते हैं, या उनसे फैशनेबिल रीसाइकल्ड "हैंडमेड" कागज़ बनाया जा सकता है जिनसे जन्मदिन, दीवाली, क्रिसमस और नए साल के ग्रीटिंग-कार्ड्स बनाए जा सकते हैं. इस कचरे में कई धातुएं और प्लास्टिक (टूथपेस्ट और मलहम के ट्यूब) होती है जिनको भी दुबारा रीसायकल किया जा सकता है. फटे पुराने कपड़ों और बेकार प्लास्टिक को भी बेचा जा सकता है. कांच को फैक्ट्री के दुबारा पिघलाकर उससे कांच की नई बोतलें बनाई जा सकती हैं.

झोपड़पट्टियों में रहने वाले यह सब काम (और साथ में अन्य काम) भी करते हैं. इससे वो पेट भरने लायक कमाई कर लेते हैं. दरअसल उनके द्वारा किए गए काम से हम जैसे अमीर लोगों को बहुत फायदा पहुँचता है.

मध्यमवर्गीय अमीर लोग, झोपड़पट्टियों में रहने वाले लोगों की हमेशा निंदा करते हैं और उन्हें चोर-उचक्का और परजीवी बताते हैं. इस तरह इन गरीब, असहाय लोगों को हमेशा, "कामचोर" "निकम्मा" "बेकार" "परजीवी" जैसे शब्दों के साथ जीना पड़ता है. इन गरीब लोगों के बच्चे स्कूल जाने की हिम्मत नहीं करते हैं. क्योंकि स्कूलों में सभ्य लोगों के बच्चे झोपड़पट्टी के बच्चों पर तानाकशी करते हैं, उनका मज़ाक उड़ाते हैं. और आजकल तो बाल-मज़दूरी की खिलाफत करना एक फैशन जैसा बन गया है. झोपड़पट्टी के बच्चे अपने माता-पिता की भरसक मदद करते हैं - कूड़ा-कचरा इकठ्ठा करने में, उसे बीनने में और साफ़ करने में.

क्योंकि झोपड़पट्टियों में रहने वाले लोग सभ्य, मध्यमवर्गीय, पढ़े-लिखे लोगों का कचरा और गंदगी साफ़ करते हैं, इसलिए सभ्य, पढ़े-लिखे लोगों को कम-से-कम इन गरीब लोगों को रीसाइक्लिंग करने के लिए कुछ न्यूनतम बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए जैसे - पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं. साथ में एक ऐसी वर्कशॉप भी, जहाँ वे एक साफ़ स्थान पर कचरे की बिनाई, छंटाई और रीसाइक्लिंग की ट्रेनिंग पा सकें.

दूसरे शब्दों में हमें अपनी झोपड़पट्टियों और स्लम को नष्ट नहीं करना चाहिए. बल्कि हमें उन्हें रीसायकल करना चाहिए?

हम में से ज़्यादातर लोग पक्के घरों में या फ्लैट्स में रहते हैं, जिनमें पीछे एक बगीचा या सामने एक आँगन होता है जहाँ बच्चे खेल सकते हैं, कपड़े सुखाए जा सकते हैं, मुर्गियां पाल सकते हैं या फिर दूध के लिए गाय रख सकते हैं. बहुत से लोग इन खुले स्थानों में सब्ज़ियां, फूल और सुन्दर पेड़ भी उगाते हैं.

क्या झोपड़पट्टियों में रहने वाले हमारे भाई-बहनों को ऐसी कोई सुविधा उपलब्ध है.

इसका उत्तर "न" है!!

अगर हम इज़्ज़त के साथ अगली शताब्दी में जाना चाहते हैं तो हमें इस स्थिति को बदलने के लिए कुछ ज़रूर करना होगा.

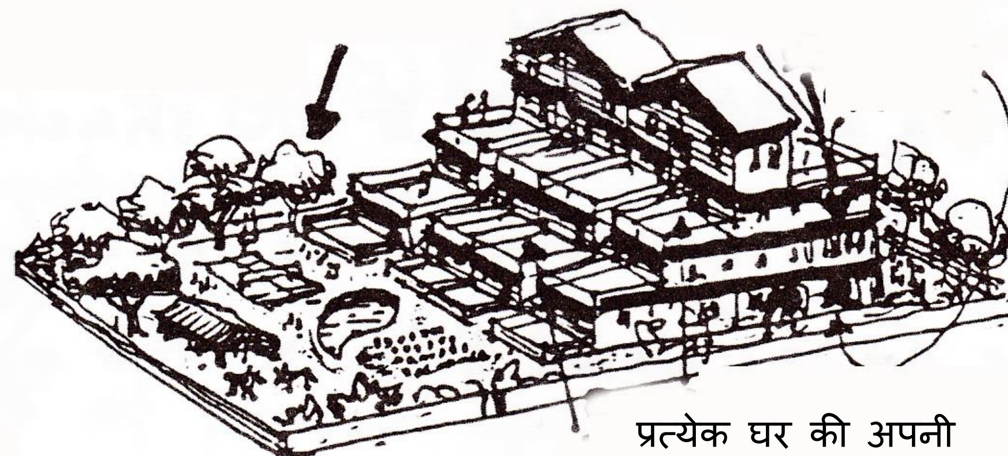
एक भीड़-भड़क्के वाली, झोपड़पट्टी की बस्ती न केवल उसमें बसने वाले लोगों के लिए, बल्कि पूरे पड़ोस के लिए खतरनाक होती है.

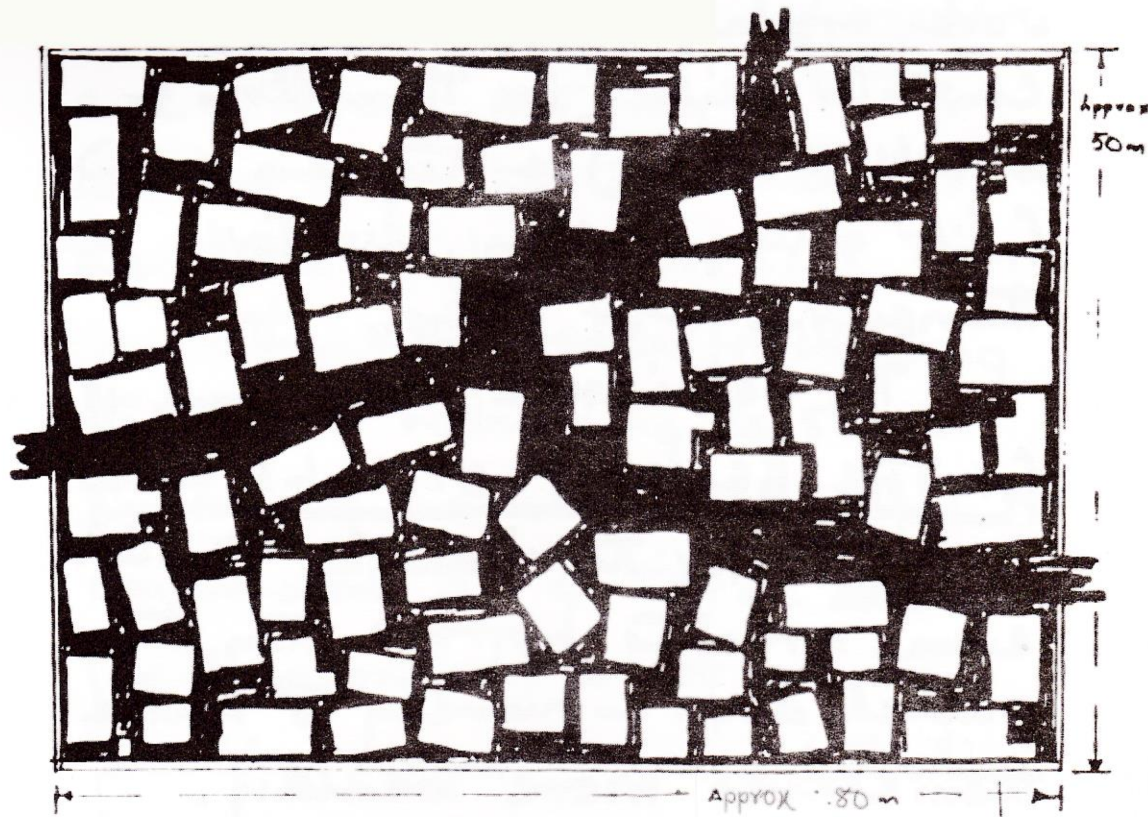
उस बस्ती को दुबारा से साफ़ करके उसका पुनःनिर्माण करके, उतनी ही संख्या के तीन-चार मंज़िले घर बनाने के पीछे एक खास कारण है. उससे गरीब लोगों को न केवल रहने के लिए अच्छे घर मिलेंगे (जैसे चित्र में दिखाए गए हैं) पर उससे भीड़-भाड़ वाले शहर में कुछ खुले स्थान भी मिलेंगे जो शहर के लिए "फेफड़ों" का काम करेंगे. उससे वहां के नागरिक धूल-धुएं से मुक्त साफ़ हवा में सांस ले पाएंगे.

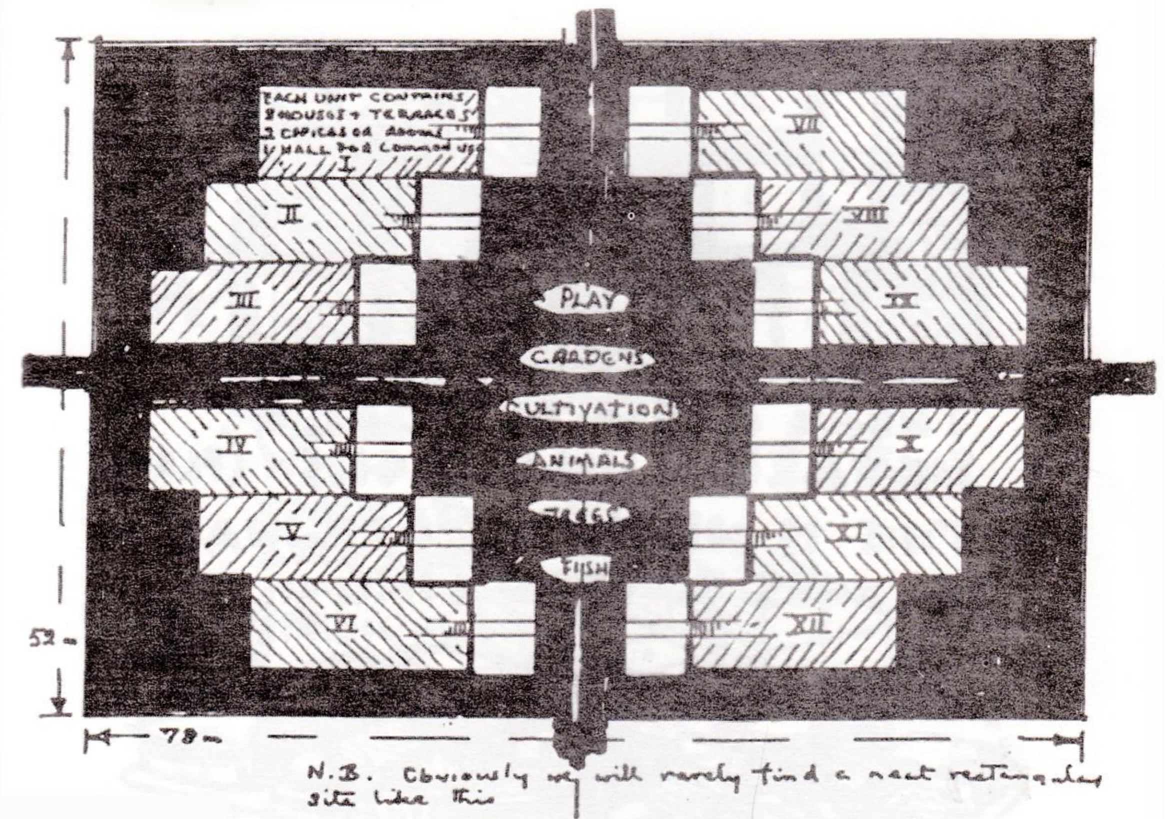
जो लोग अब इन नए निर्माण किए गए घरों में रहेंगे उनके लिए अब कुछ खुली जगह भी होगी जहाँ वे काम कर पाएंगे और खेल सकेंगे.

इस खुली जगह में वो दूध (खुद पीने और बेचने) के लिए जानवर रख सकेंगे. वो खुले स्थानों में खुद खाने और बेचने के लिए सब्ज़ियां और फल भी उगा सकेंगे.

घरों को 3-4 मंज़िला बनाने के बाद जो जगह खाली बचेगी वो सभी के फायदे के लिए होगी. उस खाली जगह पर रईस लोगों को अधिक कमाई और मुनाफे के लिए और ज्यादा मकान या इमारतें नहीं बनाने दी जाएंगी.

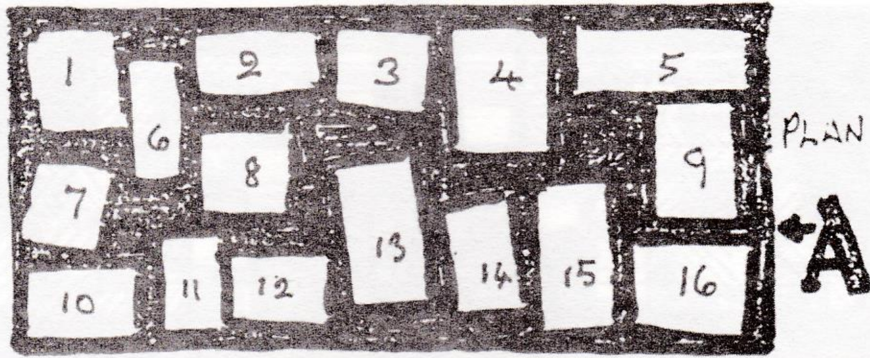




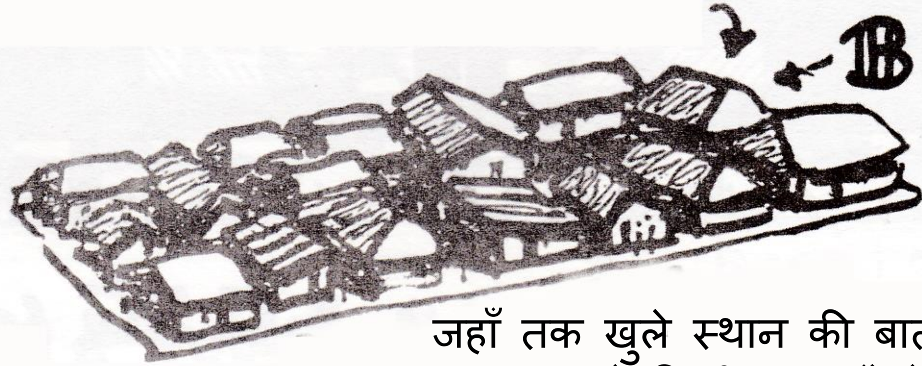


यह एक असली स्लम यानि झुग्गी-झोपड़ियों वाली बस्ती का नक्शा है. इसमें तीन बस्तियां थीं जिनमें कुल मिलाकर 100 से अधिक झोपड़ियां थीं. उनका कुल क्षेत्रफल लगभग एक एकड़ (80-मीटर x 40-मीटर) होगा.

दूसरे नक्शे (प्लान) का क्षेत्रफल भी लगभग वही (एक एकड़) है जो पिछले पन्ने की बस्ती का था. दोनों में घरों की संख्या बिल्कुल एक-समान है. नए प्लान में तीन-चार मंज़िले घर हैं जिससे मनोरंजन हॉल, स्कूल, क्लिनिक आदि के लिए लोगों को बहुत सारी खुली जगह मिल जाएगी.



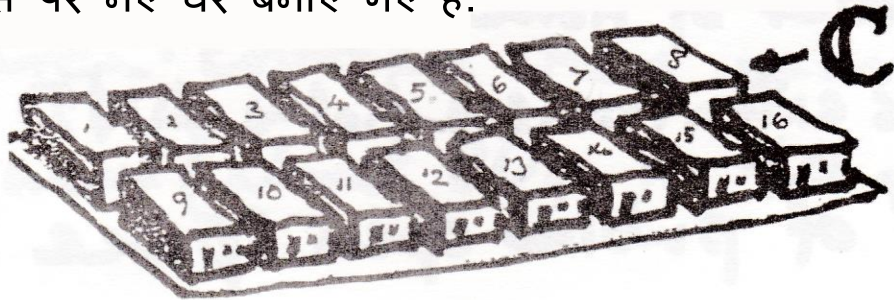
यह एक सामान्य 16 झोपड़ियों वाली बस्ती का नक्शा है.
शुरू में 16 झोपड़ियां इस तरह दिखती थीं.

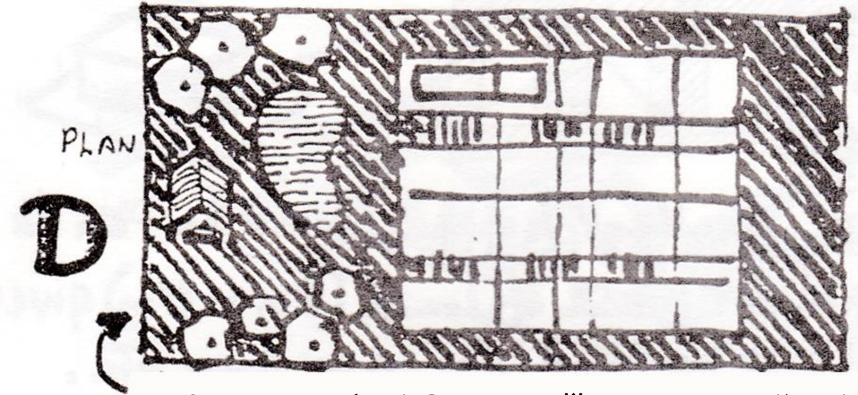


जहाँ तक खुले स्थान की बात है - प्लान C, प्लान A से किसी हाल में बेहतर नहीं है.

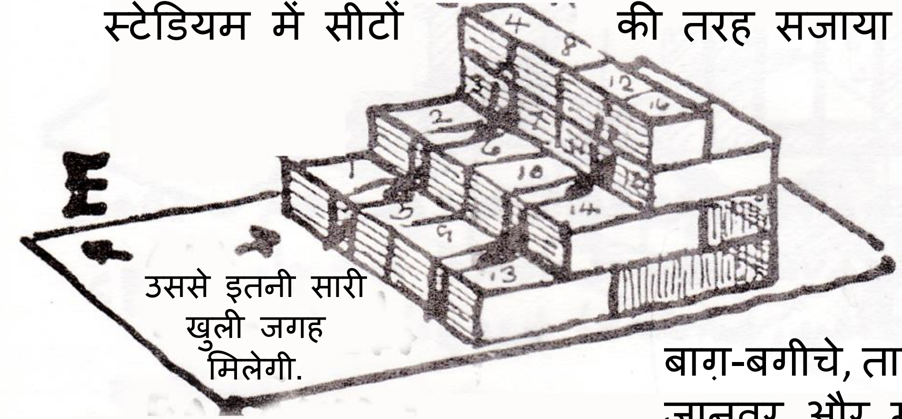
सरकारी तरीके से पुनर्वसन

यहाँ पर 16 झोपड़ियों को गिराकर उन्हीं प्लॉट्स पर नए घर बनाए गए हैं.

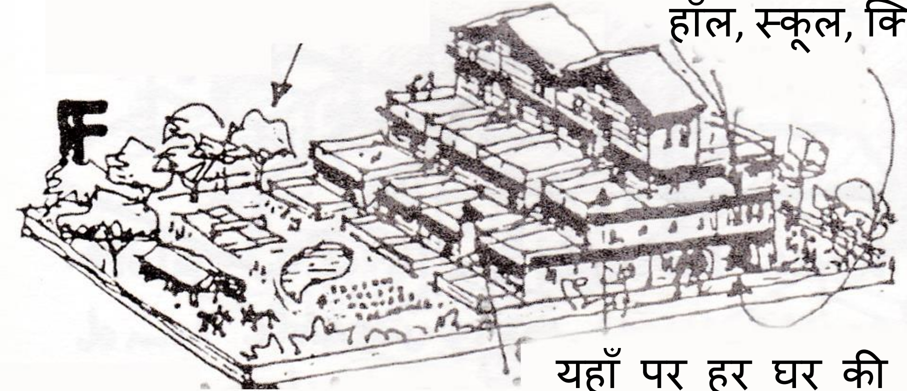




यह वही साइट है, लेकिन यहाँ पर 16 घरों को एक स्टेडियम में सीटों की तरह सजाया गया है.

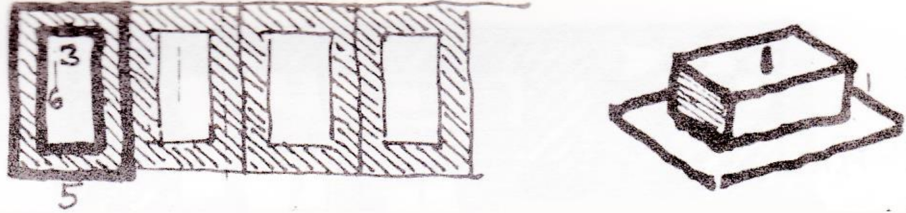


बाग़-बगीचे, ताल, गाय-जानवर और मनोरंजन हॉल, स्कूल, क्लिनिक आदि.

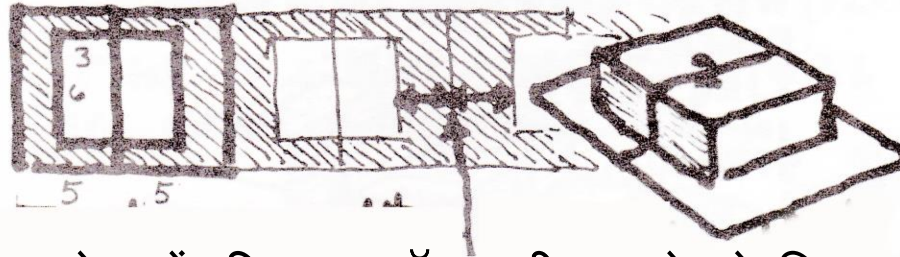


यहाँ पर हर घर की अपनी अलग छत होगी.

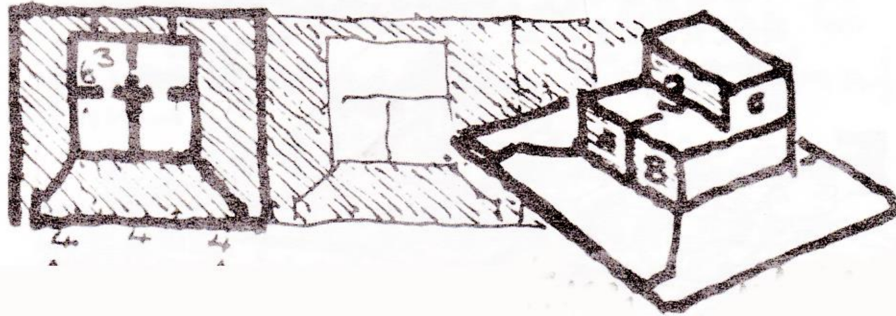
D, E और **F** तीनों में उतनी ही संख्या में घर हैं, लेकिन यहाँ के घर बेहतर हैं और बहुत सारी खुली जगह भी है.



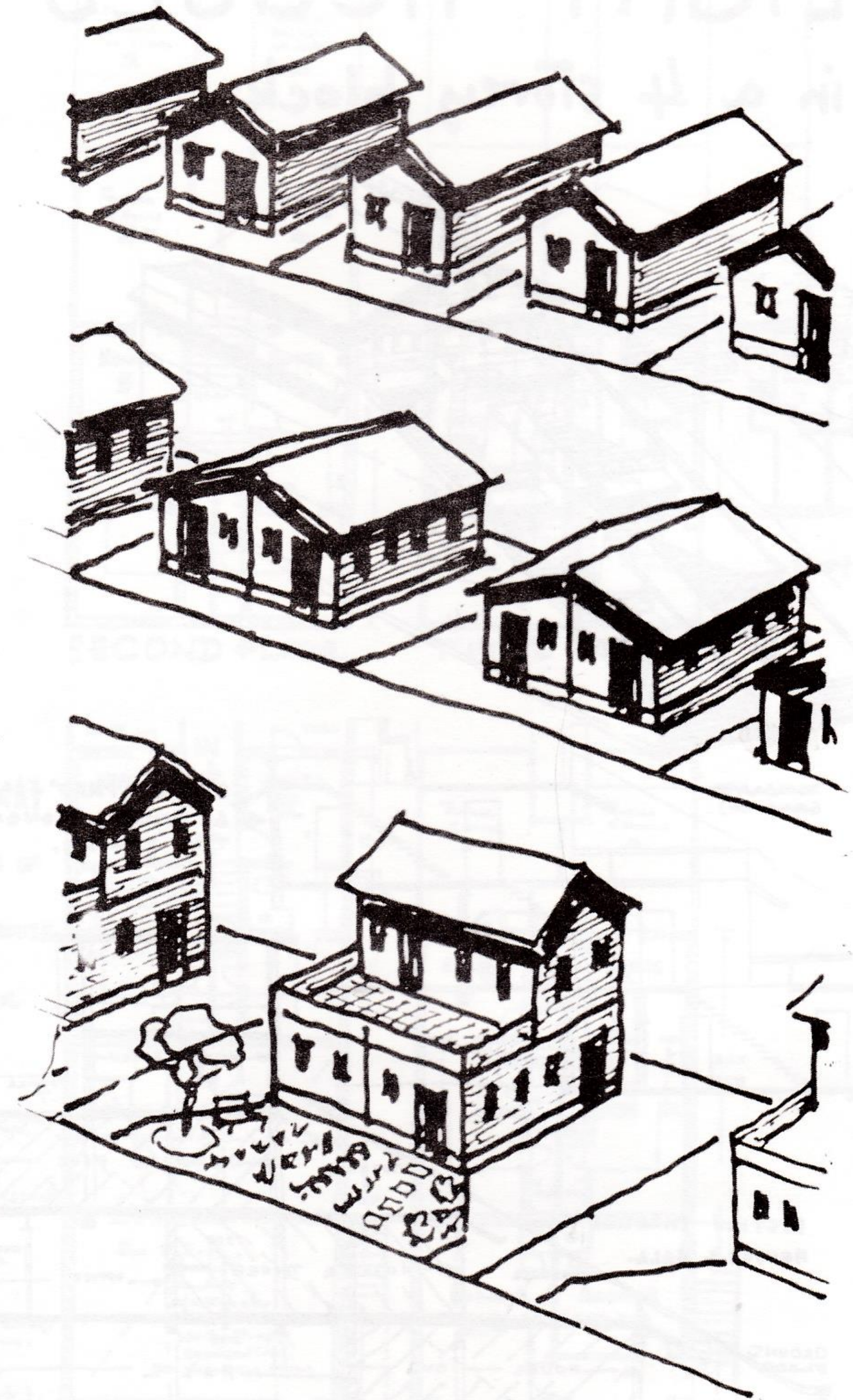
अगर 8-मीटर x 5-मीटर के प्लाट पर (6-मीटर x 3-मीटर) का एक छोटा घर बनाया जाए तो बाग़-बगीचे आदि के लिए कुछ भी खुली जगह नहीं बचेगी.



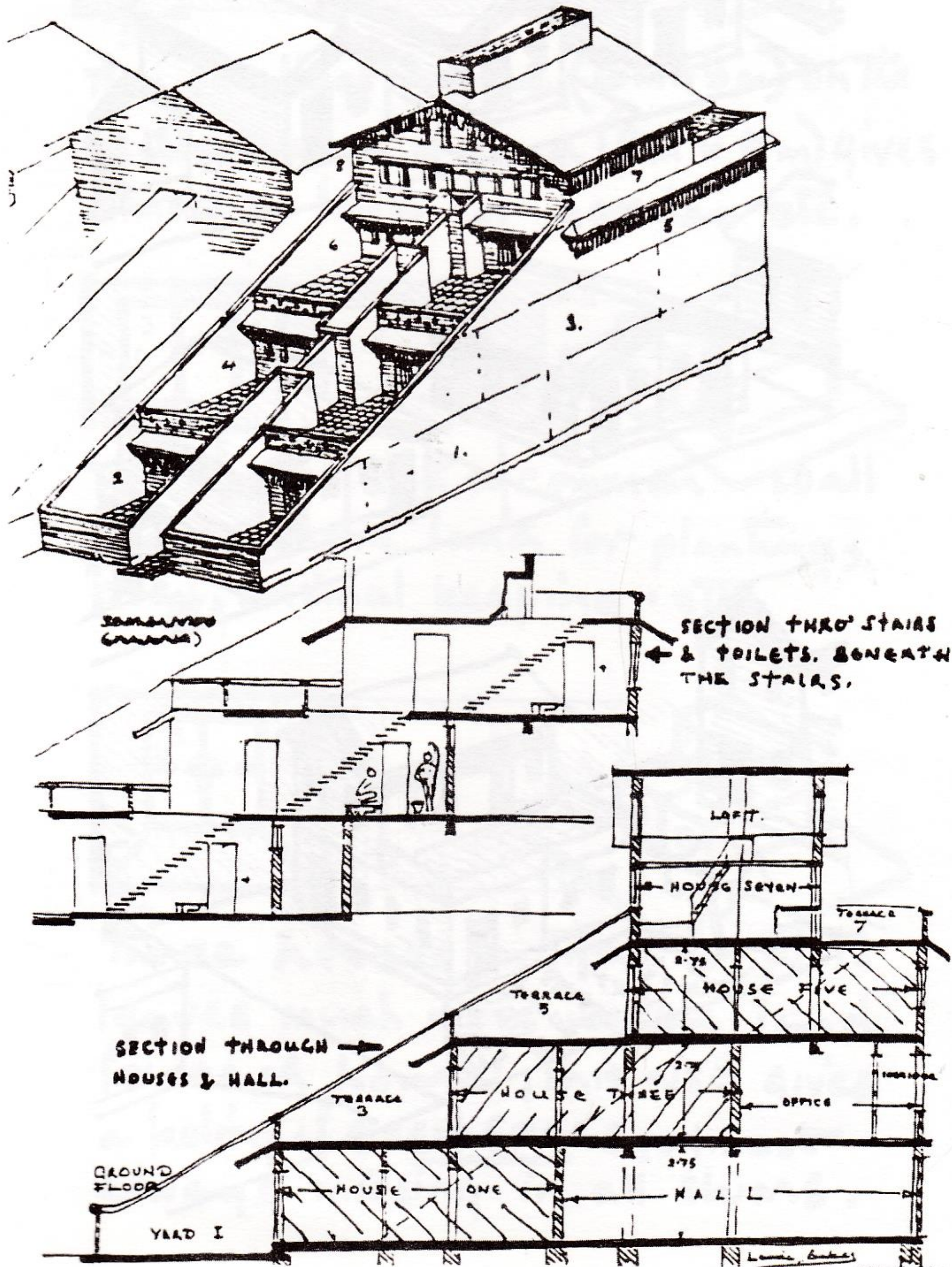
अगर दो घरों की एक कॉमन दीवार हो, तो फिर बाग़-बगीचे, खेलने और जानवरों के लिए ज़्यादा खुली जगह मिल सकेगी.

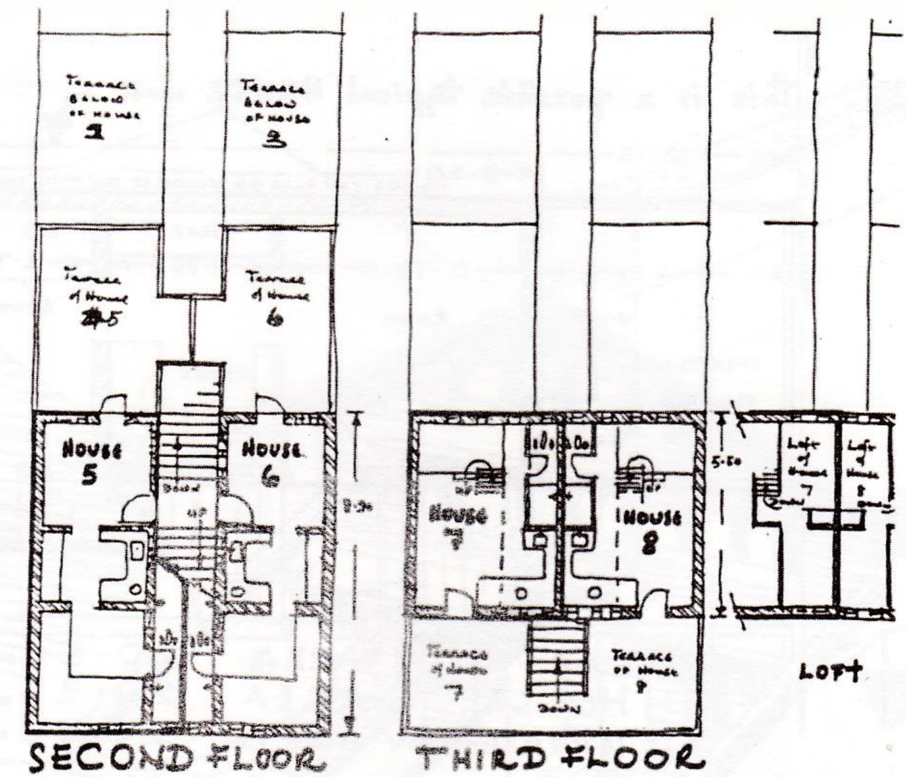


अगर तीन प्लाट के क्षेत्रफल पर तीन घरों को इस प्रकार बनाया जाए तो हरेक घर को काफी खुली जगह मिलेगी. इससे लोगों को पहली बार खुलेपन का एहसास होगा जिसका आनंद झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को पहले कभी नहीं मिला होगा.



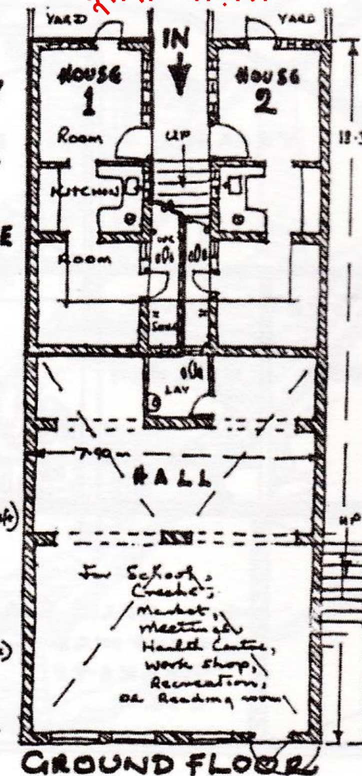
चार घरों के क्षेत्रफल वाले प्लाट
पर चार-मंज़िले आठ घर.

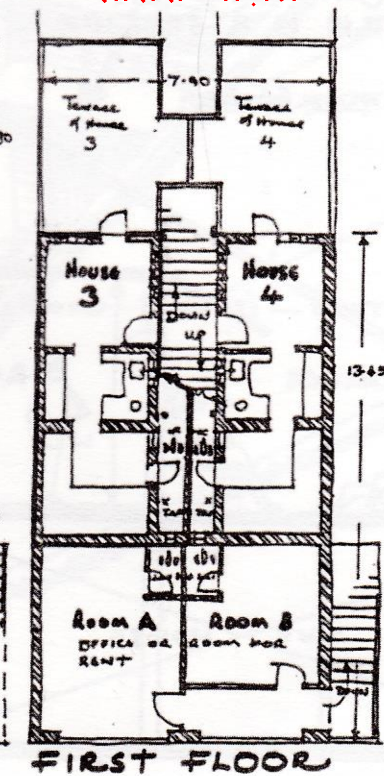




दूसरी मंज़िल

तीसरी मंज़िल

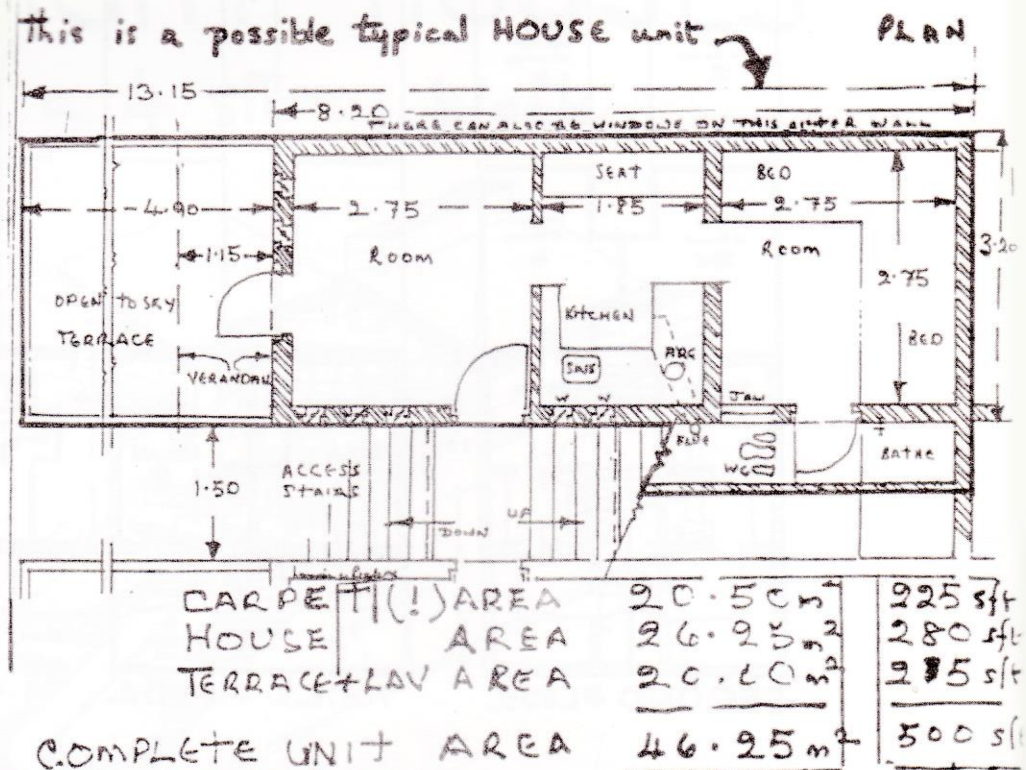


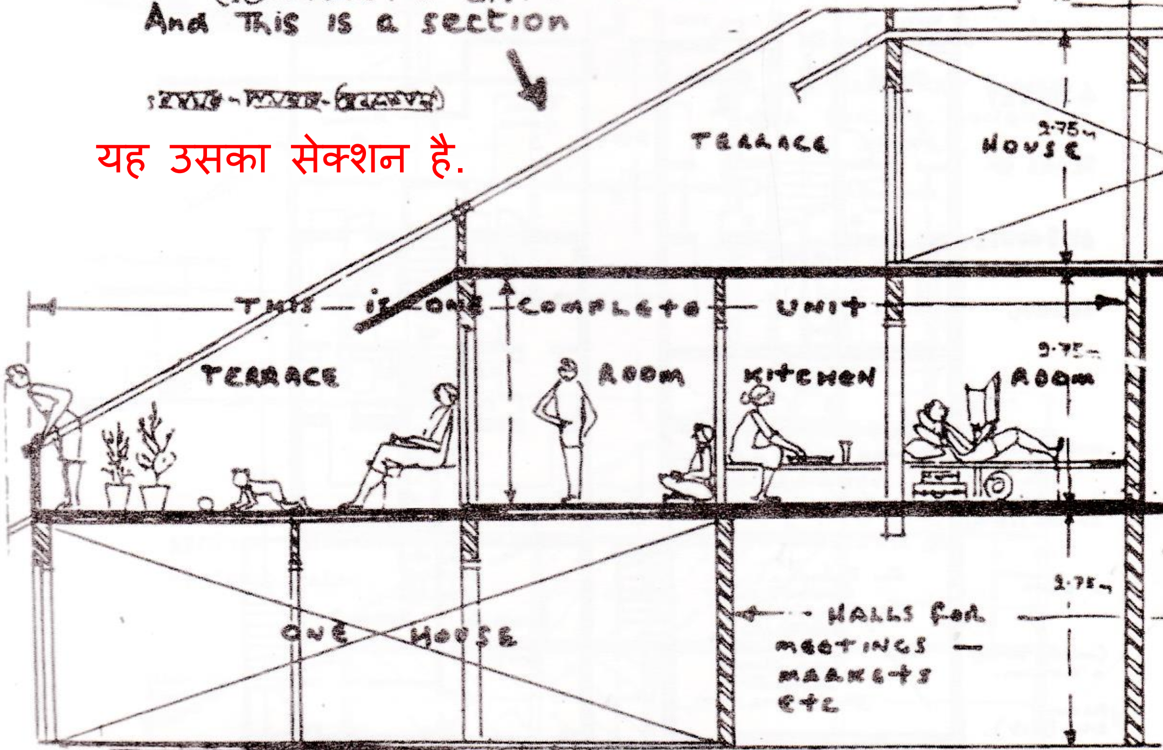


ग्राउंड फ्लोर

पहली मंज़िल

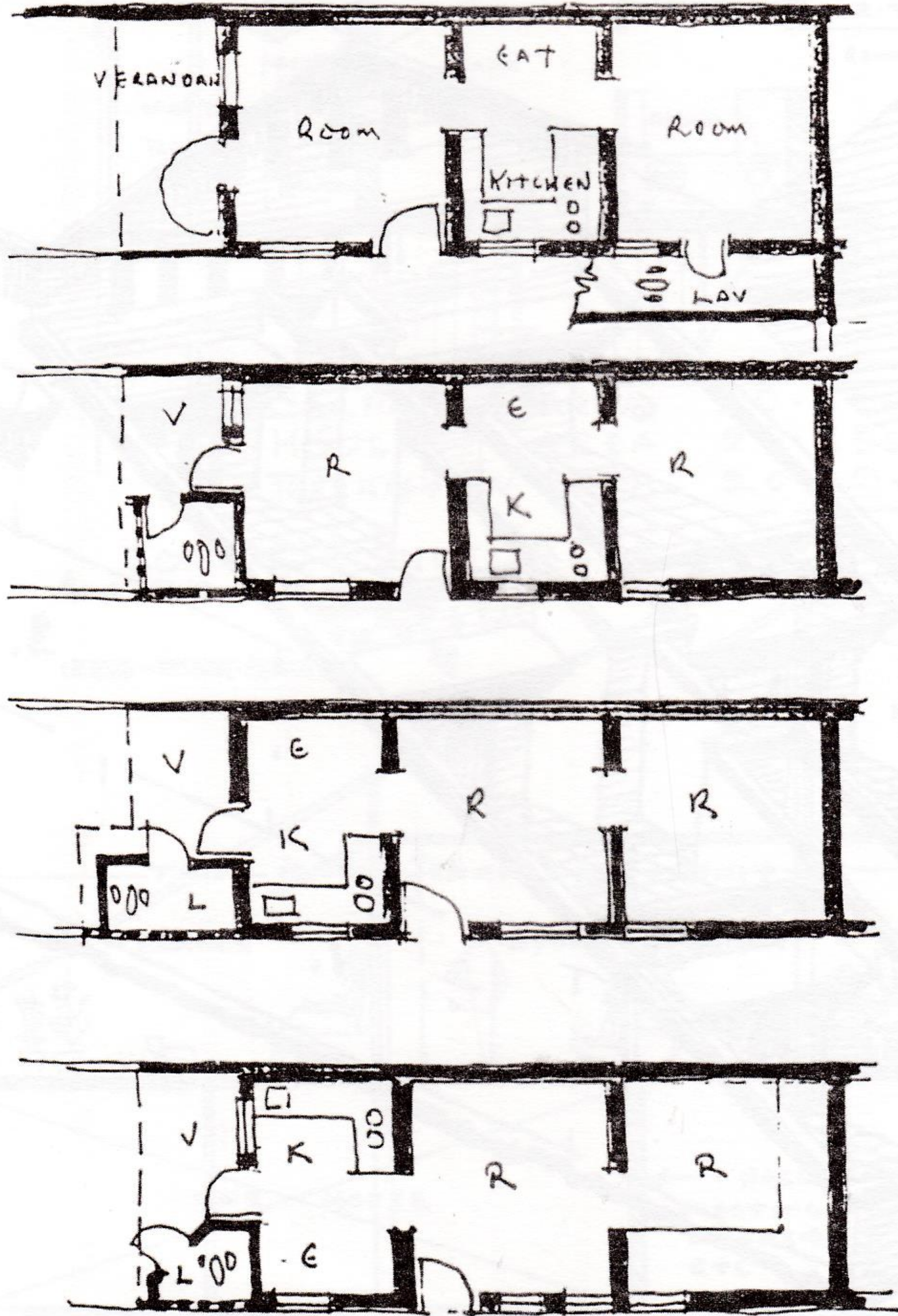
यह एक सामान्य घर का प्लान हो सकता है.



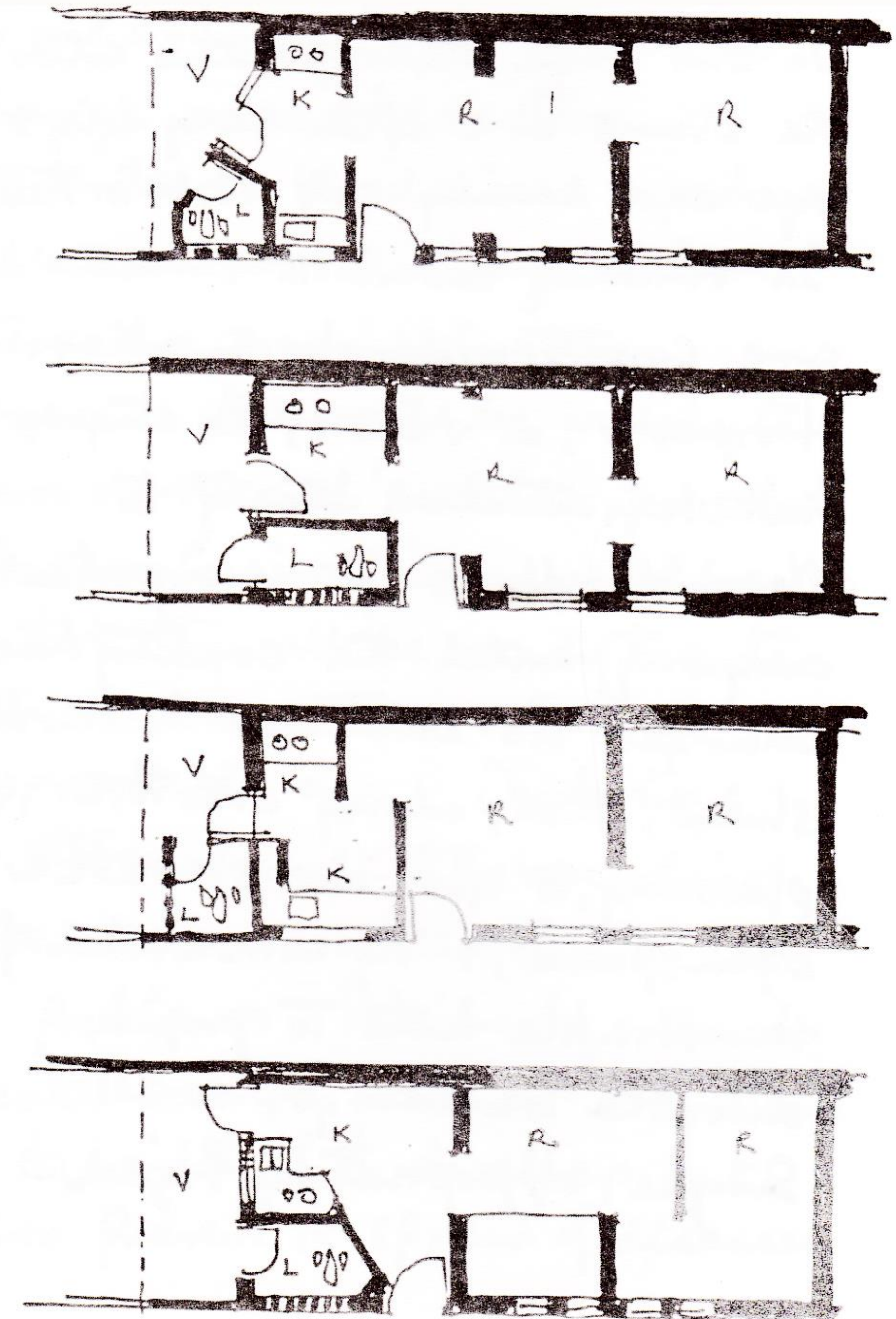


यह उसका सेक्शन है.

एक ब्लॉक में आठों घरों का प्लान वैसे लगभग एक-जैसा होगा, फिर भी वहां कमरों के आकार को बदला जा सकेगा.



हरेक प्लान में दो मुख्य कमरे होंगे. उनमें किचन और टॉयलेट की लोकेशन और आकार को, घर मालिक की मर्ज़ी के हिसाब से बदला जा सकेगा.



झुग्गी-झोपड़ी वाली बस्तियों का आकार बहुत अलग-अलग हो सकता है.

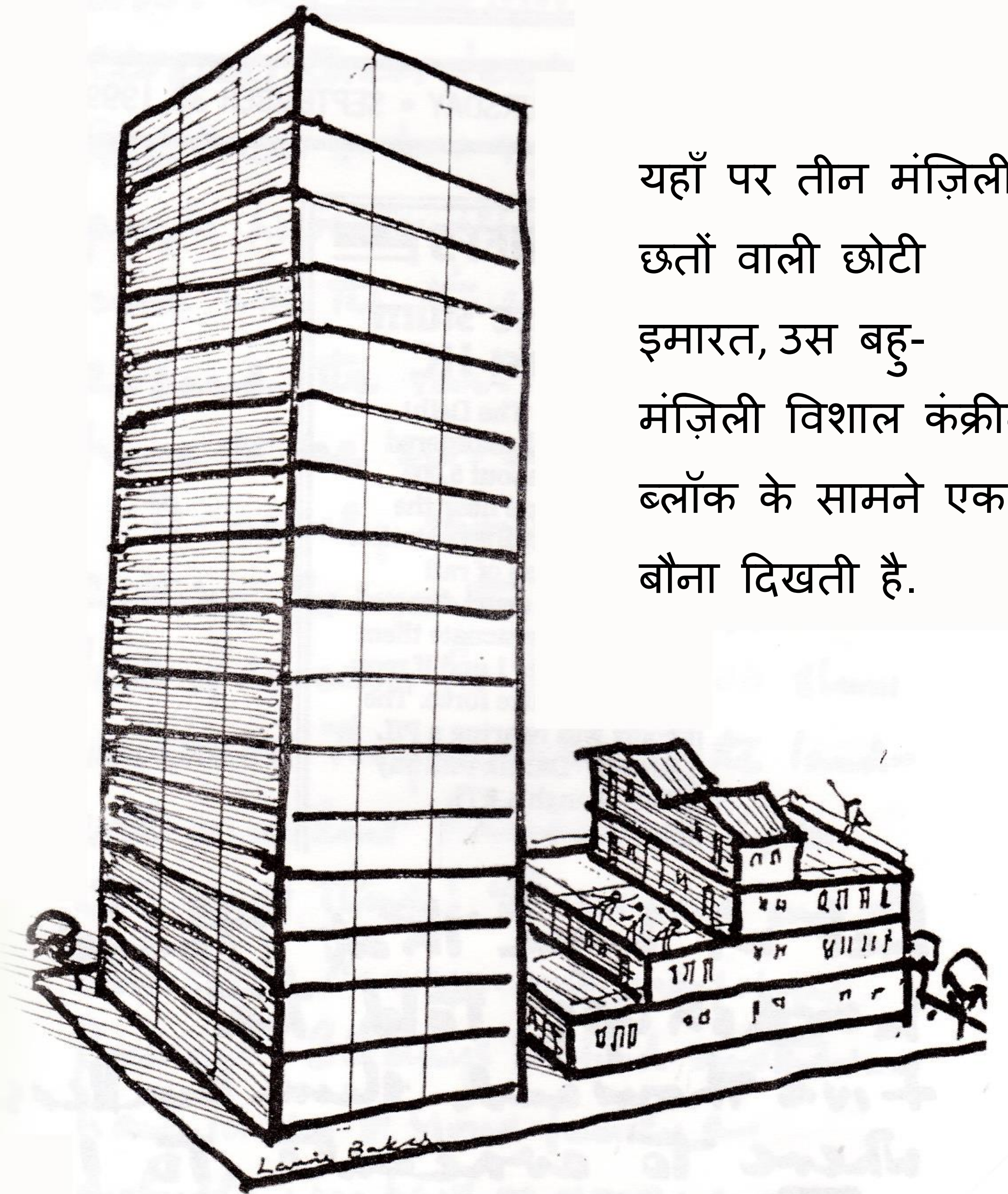
हमारे बड़े शहरों में यह बस्तियां इतनी बड़ी होती हैं कि आप आसानी से उनमें खो सकते है.

छोटे शहरों में बस्तियां भी अक्सर छोटी होती हैं.

लेकिन झुग्गी-झोपड़ी वाली बस्तियों पर एक कलंक लगा है. इसलिए देशवासी को उनके प्रति अपना नजरिया बदलना चाहिए और योजना बनाकर हमें उन्हें अधिक खुली जगह उपलब्ध करानी चाहिए, और साथ में उनकी टूटी-फूटी झोपड़ियों को तोड़कर उन्हें टिकाऊ अच्छे और बेहतर मकान देने चाहिए.

साथ में उन्हें कुछ अन्य सरल इमारतों और कमरों की भी ज़रुरत होगी. हम इस बात की अपेक्षा नहीं करेंगे कि शहरी स्कूल, झोपड़पट्टी के गंदे, अशिष्ट बच्चों के प्रति अपना नजरिया एक दिन में बदल देंगे. ऐसी बहुत सारी स्वयंसेवी संस्थाएं हैं जो इन बस्तियों में छोटी नर्सरी, या क्रेश चलाने को उत्सुक होंगी, उसके बाद यह बच्चे सामान्य सरकारी स्कूलों में जाने को तैयार हो सकेंगे. अगर बस्ती में रीसाइक्लिंग के लिए वर्कशॉप, और कबाड़ बेचने के लिए दुकाने होंगी तो उनसे बहुत सारी समस्याएं खुद सुलझ जाएंगी. अगर वहां पर एक क्लिनिक होगी तो वो न केवल बस्ती वालों की सेहत की देखभाल करेगी बल्कि वो बीमारियों को फैलने से भी रोकेगी.

F वाले नक़्शे को कभी ऐसा न बनने दें. ऐसा करके हम मिट्टी और टिन की बनी गरीब बस्ती को लोहे और कंक्रीट में बदल देंगे. हमने प्रकृति को पहले ही अपने शहरों के बाहर रखा है. क्या हम हमेशा यह बेवकूफी करते रहेंगे?



यहाँ पर तीन मंज़िली छतों वाली छोटी इमारत, उस बहु-मंज़िली विशाल कंक्रीट ब्लॉक के सामने एक बौना दिखती है.

न्यू इंडियन एक्स्प्रेस, थिरुवनंतपुरम

THE NEW INDIAN EXPRESS
THIRUVANANTHAPURAM

थिरुवनंतपुरम, गुरुवार, सितंबर 30, 1999

BRIEFS

झोपड़पट्टी में बसे लोगों को हटाओ : हाईकोर्ट

नई दिल्ली: दिल्ली के हाईकोर्ट ने झोपड़पट्टी में बसे 5000 लोगों को हटाने का आदेश दिया है जो नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास बसे थे, क्योंकि स्टेशन के पास रेल की नई पटरियां बिछानी थीं. कोर्ट ने कहा कि वे बस्ती में बसे वाशिंदों को 1 दिसंबर तक हटाएं और अगर ज़रुरत हो तो उसके लिए पुलिसबल का इस्तेमाल भी करें. कोर्ट ने दैनिक रेलवे यात्री संघ की एक याचिका पर यह आदेश ज़ारी किया है.

काश कोर्ट के जज साहब यह भी बताते कि झोपड़पट्टी के उन 5000 लोगों को फिर कहाँ बसाया जाए?

वैसे मैं इस केस की विस्तृत जानकारी से वाकिफ नहीं हूं, और मुझे यह भी नहीं पता कि हाईकोर्ट ने किन परिस्थितियों में अपना यह आदेश दिया. लेकिन इतना साफ़ ज़ाहिर है कि लोग रेलवे की ज़मीन पर आकर बस गए, और अब क्योंकि रेलवे को नई पटरियां बिछानी हैं तो फिर रेलवे की अपनी ज़मीन पर बसे लोगों को वहां से हटाना ही होगा.

मैंने अखबार की कटिंग को इसलिए दिखाया क्योंकि किसी को भी इन 5000 झुग्गी-झोपड़ियों वालों की फ़िक्र नहीं है. मौका पड़ने पर उन्हें पुलिस फ़ोर्स की मदद से 30 दिनों के अंदर उन लोगों को ज़मीन से हटाना था. कल्पना करें कि आप उन 5000 झुग्गीवासियों में से एक हैं, तो फिर आपकी भावनाएं क्या होंगी? आपके पास नया घर ढूंढने के लिए सिर्फ 30 दिन बचे हैं, और आपकी जेब में एक धेला तक नहीं हैं!

रीसाइकल्ड घरों के जो नक़्शे और प्लान इन पन्नों में दिखाए गए हैं उनमें कुछ अतिरिक्त चीज़ों को काफी कम-कीमत में और जोड़ा जा सकता है.

यहाँ पर इस बात को सामने लाना ज़रूरी है पूरे देश में ज़्यादार परंपरागत घरों में सिर्फ एक मकान नहीं होता है – वहां अक्सर एक खुला खलिहान (आंगन) भी होता है जहाँ पर परिवार अपना ज़्यादातर समय बिताता है. परिवार सिर्फ सोने के लिए मकान का इस्तेमाल करता है. मकान उनके लिए एक गोदाम और खराब मौसम में एक सुरक्षित जगह होती है. बच्चों का खेलना, जानवरों की देखभाल, ईंधन और चारा सभी खुले कंपाउंड में रखे जाते हैं.

ठीक है, मैं आपको लगभग यह कहते हुए सुन सकता हूँ, "वो सब ठीक है! आपका विचार बहुत सुन्दर है! जब आप यह सब दे ही रहे हैं तो फिर आप उन्हें एक टेलीविज़न सेट और गाड़ी भी क्यों नहीं दे देते!"

पर आप फ़िक्र न करें - मैं आपको यह लगातार याद दिलाता रहूंगा कि हमारे देश में करोड़ो बेघर परिवार हैं. यह बिल्कुल संभव है और वर्तमान में हम 20 से 35 हज़ार रुपए की लागत में घर निर्माण कर सकते हैं.
(मैं इस बात से अवगत हूं कि देश के अलग-अलग हिस्सों में घर निर्माण के सामान की कीमतों में काफी अंतर होगा). हमारे देश के प्रमुख ने अभी हाल में ही देश की प्राथमिकताओं की एक सूची ज़ाहिर की है.

सबसे प्रमुख प्राथमिकता देश में छह लेन वाली हाईवे बनाना है जो देश को कश्मीर से कन्याकुमारी तक जोड़ेंगी! मैं उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूं जब मैं अपने शहर त्रिवेंद्रम से कारगिल तक ऐसी सड़क पर अपनी कार में यात्रा कर पाऊंगा!

वैसे इन पन्नों पर झोपड़पट्टियों के रीसाइकल्ड मकानों के जो चित्र और नक़्शे दिखाए गए हैं वो सिर्फ ख़याली पुलाव नहीं हैं. राजनैतिक चाहत होने पर हम उनके बारे में ज़रूर कोई ठोस कदम उठा सकते हैं.

हमारे देश में पहले से ही इस प्रकार की बड़ी समस्यायों को सुलझाने के लिए सरकारी विभाग बने हैं जैसे जल विभाग, बिजली विभाग, सोलर और बायोगैस ऊर्जा, सड़क विभाग, शिक्षा और स्वास्थय विभाग, मछली विभाग, सामजिक वनीकरण विभाग, लघु उद्योग और निश्चित रूप से बिल्डिंग विभाग. समस्याएं आएंगी क्योंकि बहुत से निहित स्वार्थ हमें वो काम करने से रोकेंगे. लेकिन हमें उन समस्याओं से ज़रूर निबटना होगा और हमें उस काम को अभी तुरंत शुरू करना होगा!

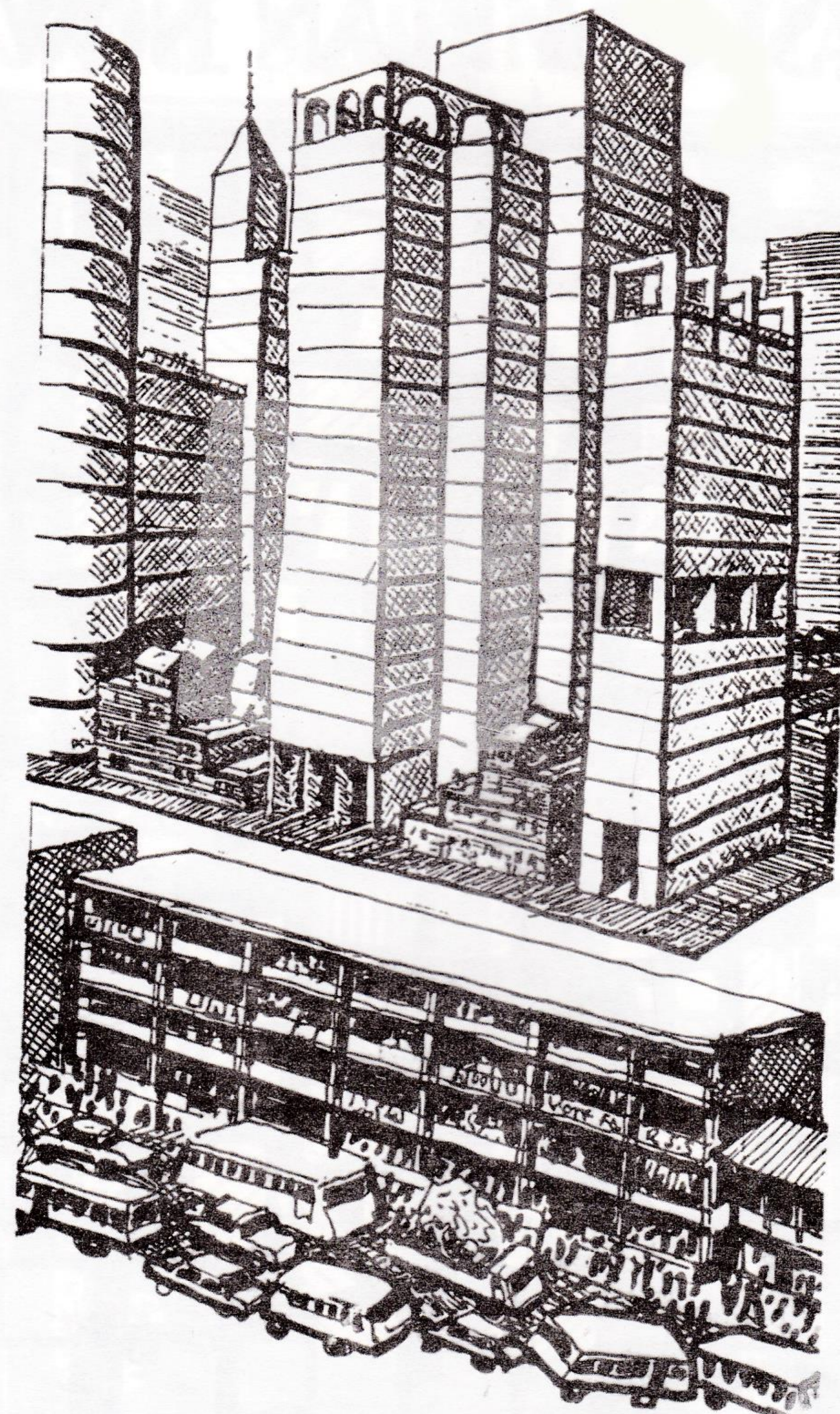
बहुमंज़िले "मॉडर्न" ब्लॉक्स और कांच, स्टील और सीमेंट के बने महंगे ऑफिस और फ्लैट्स के प्रति अमीर लोगों का ज़रूर आकर्षण होगा लेकिन उनको बनाने में बहुत अधिक ऊर्जा खर्च होती है.

बहुमंज़िली "मॉडर्न" ब्लॉक्स के कारण "सैनिटेशन" और "प्राकृतिक आपदा" का खतरा भी बहुत बढ़ जाता है.

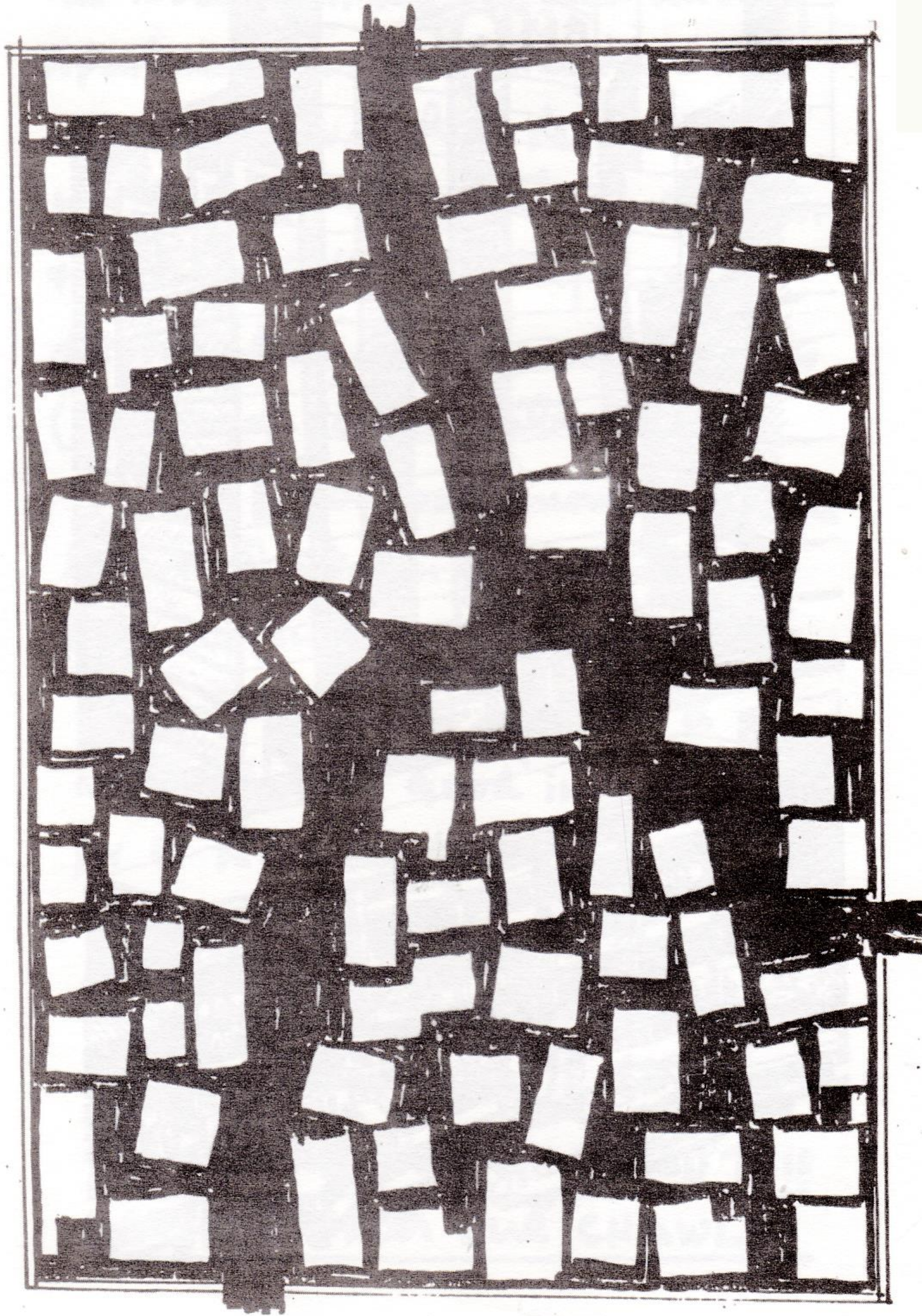
लेकिन अमीर लोग ऐसे बहुमंज़िले "मॉडर्न" ब्लॉक्स को एक अच्छा पूंजी निवेश मानते हैं.

बहुत ऊंची बहुमंज़िले यानि "मॉडर्न" ब्लॉक्स लोगों की पानी, शौच आदि समस्याओं का व्यावहारिक हल नहीं हैं. लोग ऐसे हल को कभी स्वीकार नहीं करेंगे.

हमें कुछ सबक अपनी "चॉल" और झोपड़पट्टियों से सीखना चाहिए था.



वर्तमान झोपड़पट्टी



वही झोपड़पट्टी एक साल के बाद

COMMUNITY

MARKET & SHOPS

EACH UNIT CONTAINS
8 HOUSES + TERRACES
2 OFFICES OR ROOMS
1 HALL FOR COMMON US

CRECHE

OCCUPATIONS

SHOPS

हमें अपनी झोपड़पट्टियों की
रीसाइक्लिंग करने के काम को पहली
प्राथमिकता देनी चाहिए.

साथ-साथ हमें ऊंची अट्टालिकाओं के
निर्माण पर कुछ समय के लिए रोक
लगा देनी चाहिए.

अमीरों को कुछ समय के लिए अपनी
हविश पर रोक लगानी चाहिए.

हम कम-से-कम यह कोशिश ज़रूर करें
कि जिन लोगों के पास बिल्कुल पैसे नहीं हैं
या जो समूह आर्थिक रूप से बहुत कमज़ोर हैं
वो कम-से-कम थोड़ा आगे बढ़कर
कम-आय समूह के सदस्य बन जाएं।

झोपड़पट्टियां

बेहद शर्मनाक जगहें हैं

वे मानवता पर एक कलंक हैं!

न केवल उन लोगों के लिए

जो उनमें रहने को मज़बूर हैं

बल्कि हम सब लोगों के लिए

योजनाकार, आर्किटेक्ट

भवन निर्माता और ठेकेदार,

हमारे सरकारी विभागों

और उन सभी लोगों के लिए जो

झोपड़पट्टियों के पास से होकर गुज़र जाते हैं

और बहाना बनाते हैं, और जो अपनी आंखें दूसरी
ओर फेर लेते हैं, जैसे उनका झोपड़पट्टियों से कुछ
लेना-देना ही न हो.

COSTFORD

Registered Office
Ayyanthole, Thrissur, Kerala - 680 003
costfordayyanthole@gmail.com
+91 487 2365 988, 2366 388; Fax: +91 487 2366 388

COSTFORD Sub Centres

Thiruvananthapuram 'The Hamlet', Nalanchira P.O, Thiruvananthapuram - 695 015
costfordtvm@gmail.com
+91 471 2530 031, +91 94465 57820

Kollam TD. Nagar-103, High School Junction, Kachery P.O., Kollam – 691 013
costfordkollam@gmail.com
+91 474 2796 493, +91 94957 00298

Alappuzha 'Laxmi', Mullackal P.O, Alappuzha – 688 010
costfordalpy@yahoo.com
+91 93498 37016

Kochi House No. 44/965, Pavakulam Lane, Near Post Office, Kaloor, Kochi -682 017
costfordekm@gmail.com
+91 94470 46849

Thrissur Thrissur District Centre, Ayyanthole, Thrissur - 680 003
+91 487 2365 988, +91 94463 24369

Triprayar Sree Rama Polytechnic, Valapad P.O, Thrissur - 680 567
costfordtpr@gmail.com
+91 94473 91526

Shornur Gurunilayalam, Opp. Suma Theatre, Shornur – 679 121
nanducostford@gmail.com
+91 94477 33853

Palakkad "Lakshana", Puthur, Palakkad -678 001
+91 94478 39161

Ponnani Near Thrikkavu Temple, P.O. Ponnani, Malappuram -679 577
+91 94475 27349

Malappuram "Govindam", Dr. Shaju Road, MSPLP School, Malappuram -
costfordmpm2010@gmail.com
+91 94477 78356

Kozhikode Puthenpurayil , Edakkadu P.O, Kozhikode -
ragamcafe123@gmail.com
+91 97475 02284

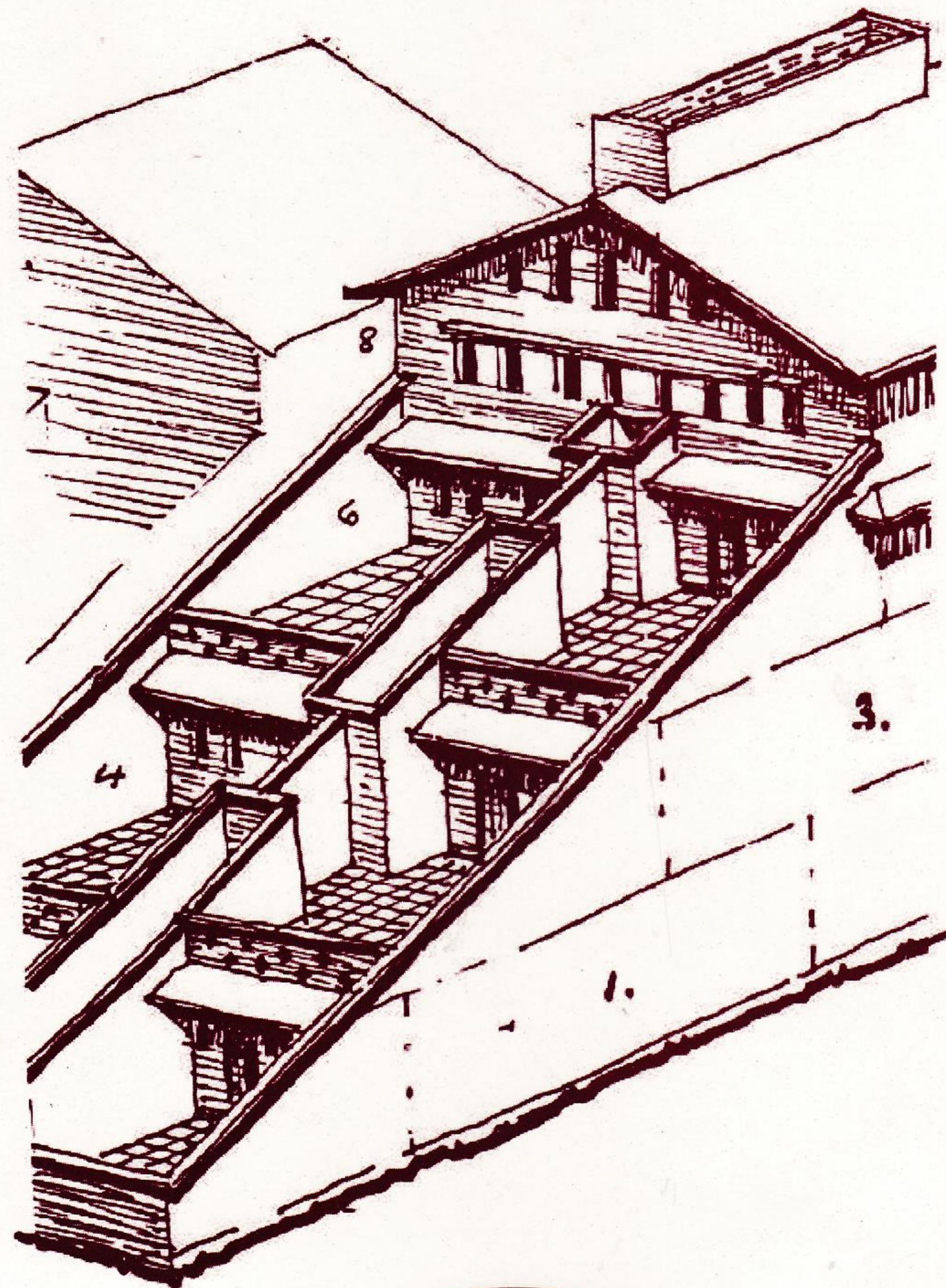
लेखक



लॉरेंस विल्फ्रेड बेकर सिर्फ एक प्रसिद्ध वास्तुकार थे. वह एक कार्टूनिस्ट भी थे, एक ऐसे व्यक्ति जो प्रकृति से बेहद प्रेम करते थे. वे एक मानवतावादी थे. वे अपने विचारों और कर्मों से गांधीवादी थे. 1917 में बर्मिंघम स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर में अपना अध्ययन समाप्त करने के बाद वह यूनाइटेड किंगडम में रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स के एसोसिएट बन गए. 1944 में महात्मा गांधी के साथ एक आकस्मिक मुलाकात ने उन्हें प्रेरित किया और भारत से उनका परिचय कराया. इसके बाद वह भारत में बस गए. उन्होंने केरल की रहने वाली अपनी पत्नी और मेडिकल डॉक्टर एलिजाबेथ बेकर की मदद की और ग्रामीण गरीबों को घर सस्ते में मुहैया करने के लिए एक ख़ास वास्तुकला का अभ्यास भी किया. यह एक सुदूर गाँव, पिथौरागढ में हुआ. हिमालय क्षेत्र में उन्होंने अपना घर, अस्पताल और स्कूल बनाया और वहां 17 साल गुजारे. साठ के दशक के मध्य में बेकर दंपति केरल लौटे गए और उसके बाद अंत तक वहीं रहे.

1970 में त्रिवेन्द्रम शहर में जाने के बाद, बेकर ने कई घरों, संस्थानों सहित कई अन्य इमारतें भी बनाईं जो लागत में कम होने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल भी थीं. 1969-77 के दौरान केरल के दूरदर्शी मुख्यमंत्री स्वर्गीय सी. अच्युता मेनन भवन निर्माण को लेकर बेकर के दर्शन और दृष्टिकोण के प्रशंसक और प्रबल समर्थक बन गए थे. स्वर्गीय के. एन. राज, भारत के उत्कृष्ट अर्थशास्त्रियों में से एक थे. कम-लागत भवन प्रौद्योगिकी से संबंधित मामलों पर सलाह देने के लिए बेकर कई सरकारी और अन्य सार्वजनिक संस्थानों के साथ निकटता से जुड़े रहे. उन्होंने बड़ी संख्या में युवा वास्तुकारों का भी मार्गदर्शन किया जो फिर तिरुवनंतपुरम में काम करने और रहने आए. उन्होंने आवास और भवन निर्माण पर ज्ञान प्रदान करने वाली कई किताबें लिखीं. वह कार्टून भी बनाते थे और अच्छे चित्रकार भी थे. उन्होंने और उनकी पत्नी ने बेहद सादगी और सेवा का जीवन व्यतीत किया. लॉरी बेकर का 1 अप्रैल 2007 को निधन हो गया.

वर्तमान में दो संगठन उनकी विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं. एक ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्र है, जिसे कॉस्टफोर्ड के नाम से जाना जाता है, जिसका मुख्यालय त्रिशूर में है और इसकी इकाइयां तिरुवनंतपुरम और केरल के अन्य जिलों में भी हैं. इसकी स्थापना 1985 में सी. अच्युत मेनन, के. एन. राज और लॉरी बेकर ने संयुक्त रूप से की थी. दूसरा लॉरी बेकर सेंटर फॉर हैबिटेट स्टडीज है जो कि त्रिवेन्द्रम में स्थित है और इसकी स्थापना 2009 में प्रशिक्षण, अनुसंधान, प्रकाशन और अन्य संबंधित गतिविधियों के लिए केरल सरकार की वित्तीय सहायता से और कॉस्टफोर्ड कार्यकर्ताओं की पहल के तहत की गई थी. यह केंद्र लॉरी बेकर के दर्शन और दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए हरित आवास के निर्माण के लिए कार्यरत है.



COSTFORD

Centre of Science and Technology For Rural Development